आस्था यानि विश्वास। विश्वास है तो मंजिल दूर नहीं। विश्वास पर दुनिया कायम है। विश्वास है कि मंजिल जरूर मिलेगी। "Hope" विद्यालय सेंट थॉमस,इंदिरापुरम द्वारा चलाया गया एक अभियान है, जिसमें समाज के प्रति कर्त्तव्य बोध की भावना है। यह निःस्वार्थ भाव रखते हुए विद्यालयाध्यक्ष महोदय द्वारा लिया गया संकल्प है कि निरक्षर जीवन यापन करते बच्चों के जीवन में भी शिक्षा का प्रकाश हो। साक्षरता का प्रकाश उन सभी के जीवन को भी प्रज्ज्वलित कर सके। उनके द्वारा प्रारंभ इस मुहिम का हिस्सा सेंट थॉमस परिवार के प्रशासनिक अधिकारी(प्रधानाचार्य, उप-प्रधानाचार्य, मुख्य-अध्यापिका व अन्य सहायक गण)हैं, जिन्होंने स्वैच्छिक अध्यापक व अध्यापिका गणों के सहयोग से इस कार्य का शुभारंभ किया। कहते हैं कि बूँद- बूँद से घड़ा भर ही जाता है , उसी प्रकार से यह प्रयास कि साक्षरता का प्रकाश घर-घर को रोशन करे,अवश्य फलीभूत होगा। इस कार्य के शुभ परिणाम नज़र आने भी लगे हैं। शिष्टाचार के ककहरे से दूर जीवन यापन करते बच्चों ने जब विद्यालय आना प्रारंभ किया व सहर्ष शिक्षा को प्राप्त करने का निर्णय लिया तब उनकी प्रतिभा भी नज़र आई। विद्यालय द्वारा आयोजित क्रिसमस के सांस्कृतिक कार्यक्रम में उन छात्रों द्वारा प्रदर्शित नृत्य ने सभी जनों की आँखें नम कर दी। अनुभूत हुआ कि ईश्वर सभी में समाया है। उसने जब मानव कृति को गढ़ा तब जिस समानता का परिचय दिया ,तो उसकी प्रतिछाया वह मनुष्य , मानवीय गुणों से ओत-प्रोत उसके उद्देश्य को अवश्य पूरा कर समाज के प्रति अपना दायित्व अवश्य निभाएगा।